'छप्पर' उपन्यास की 'रजनी' पर भारतीय संवैधानिक मूल्यों का प्रभाव

प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
वसुंधरा कला महाविद्यालय,
जुले सोलापूर (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :

भारत एक समाजवादी धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य है। भारत का गणराज्य भारतीय संविधान के अनुसार शासित है। भारतीय संविधान के मसौदा समिति के अध्यक्ष डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने दो वर्ष ग्यारह महिने सत्रह दिनों में अथक प्रयास कर भारत के संविधान की निर्मिति की है। उन्होंने २६, नवंबर, १९४९ को 'भारतीय संविधान' संविधान सभा के अध्यक्ष तथा राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी को सौंप दिया। यह संविधान २६ जनवरी, १९५६ से लागू हुआ। महामानव डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी द्वारा निर्मित 'भारतीय संविधान' विश्व का सर्वाधिक लंबा, विस्तृत और लिखित संविधान है।इसमें ३९५ अनुच्छेद, २२ भाग और ८ अनुसूचियाँ थीं। परंतु आज इसमें ४४६ अनुच्छेद, २५ भाग और १२ अनुसूचियाँ, ५ अनुलग्नक तथा १०० संशोधन हुए हैं।

भारत का संविधान भारत के लोगों द्वारा, भारत के लोगों पर न्यायपूर्ण तरीके से शासन करते हुए देश का विकास करने के लिए बनाया गया है। संविधान वास्तव में एक नीति-नियमों का समूह है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने अत्यंत विस्तृत और गहन अध्ययन कर विश्व का सर्वश्रेष्ठ संविधान बनाया है। भारतीय संविधान का मूल उद्देश्य जाति, वर्ग, वर्ण तथा शोषण विहिन समाज की स्थापना करना है। भारतीय संविधान समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुता आदि मूल्यों को महत्व देता है। हमारे संविधान ने प्रत्येक भारतीय नागरिक को समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शोषण के खिलाफ लड़ने का अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, शैक्षिक और सांस्कृतिक अधिकार आदि अधिकार प्रदान किए हैं।

डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी का प्रथम दलित उपन्यास 'छप्पर' हिंदी साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है। 'छप्पर' डॉ. बाबासाहब आंबेडकर और उनके द्वारा निर्मित भारतीय संविधान के मूल्यों पर आधारित है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका 'रजनी ' पर भारतीय संविधान का अत्याधिक व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।गंगा के तट पर बसे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मातापुर नामक छोटे-से गाँव में रहनेवाली रजनी जमींदार ठाकुर हरनाम सिंह की एकलौती बेटी है। बचपन में ही माँ के गुजर जाने के कारण वह माँ की ममता से वंचित होती है। रजनी पिता के संपूर्ण धन-दौलत की अकेली वारिस है। लेकिन उसे इस संपत्ति का बिल्कुल मोह नहीं है। रजनी पिता के दबंग और शोषणकारी रूप के कारण उनसे ज्यादा घुल-मिल नहीं पाती है। वह गाँव के स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत शहर में उच्च शिक्षा प्राप्त करती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के कारण रजनी के व्यक्तित्व का विकास होता है। वह उच्च शिक्षा पूरी कर अपने गाँव वापिस आती है । उसे पता चलता है कि उसके पिता ठाकुर हरनाम सिंह ने उसके दलित जाति के सहपाठी चंदन को उच्च शिक्षा प्राप्त करने से सिर्फ इसलिए रोका है क्योंकि वह दलित है। चंदन के माता-पिता रमिया और सुक्खा को सिर्फ इसलिए गाँव से बेदखल कर दिया है क्योंकि दलित जाति का चंदन उनकी बात न मानकर शहर जाकर शिक्षा अर्जित कर रहा है। रजनी अपने सामंतवादी विचारों के पिता ठाकुर हरनाम सिंह को समझाती है कि स्वतंत्र भारत के संविधान के अनुसार प्रत्येक भारतीय नागरिक को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार मिला है। किसी भी भारतीय नागरिक को जाति, धर्म, वंश, लिंग, भाषा तथा अन्य किसी भी कारण से शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता है। रजनी इसी विचारधारा को मानती है। रजनी अपने पिता से कहती है, "यदि चन्दन पढ़-लिखकर कुछ काबिल बनना चाहता है तो यह उसका संवैधानिक हक है, इसपरकिसी को एतराज क्यों होना चाहिए। सुक्खा यदि अपना पेट काटकर अपने बेटे को पढ़ाना चाहता है तो उसको ऐसा करने से क्यों रोका जाए? मैं तो कहती हूँ कि इसके लिए तो सुक्खा की मदद की जानी चाहिए और दूसरे लोगों को भी सुक्खा से प्रेरणा लेकर अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर काबिल बनाना चाहिए। जब तक दूसरे लोग भी सुक्खा की तरह अपने बच्चों को काबिल बनाने की ओर ध्यान नहीं देंगे तब तक न देश का उत्थान होगा और न समाज का।"[१] ठाकुर हरनाम सिंह रजनी से कहते हैं कि चन्दन की तरह गाँव के सभी दलित शिक्षा प्राप्त कर गाँव छोड़कर शहर में रहने लगेंगे तो उनके खेतों और घरों में काम करने के लिए नौकर नहीं मिलेंगे। दलितों का पढ़ना-लिखना उनके जैसे सवर्ण जमींदारों के लिए अहितकारक है। रजनी अपने पिता की बातों पर आपत्ति जताती है। भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक

भारतीय नागरिक को उसकी इच्छा के अनुसार कोई भी उद्योग, व्यवसाय या नौकरी करने की स्वतंत्रता है। रजनी यह बात अपने पिता ठाकुर हरनाम सिंह को समझाती है कि चंदन या अन्य किसी भी दलित जाति के व्यक्ति को उनकी मर्जी के अनुसार उनकी खेती या घर में मजदूरी करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। उन्हें सदियों से चली आ रही गलत परंपराओं को छोड़कर आधुनिक विचारों का स्वीकार करने के लिए कहती है।रजनी का कथन है,"संविधान के अनुसार देश के प्रत्येक नागरिक को सम्मान और स्वाभिमानपूर्वक जीने का हक है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी स्वेच्छानुसार व्यवसाय चुनने और जीवन जीने की दिशा निर्धारित करने की स्वतंत्रता है।"[२]

भारतीय संविधान की धारा १४ से १८ के अनुसार सभी भारतीय नागरिकों को समानता प्रदान की गयी है। रजनी समानता की पक्षधर है। वह किसी भी तरह की विषमता का विरोध करती है। भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक भारतीय नागरिक को स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। हर भारतीय नागरिक अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी व्यवसाय या नौकरी कर अपना जीवन निर्वाह कर सकता है। रजनी भी इन्हीं विचारों को मानती है।वह पिता को समझाते हुए कहती है कि भारतीय संविधान के अनुसार हर भारतीय नागरिक को शोषण के खिलाफ लड़ने का अधिकार प्राप्त हुआ है। किसी से जबरदस्ती मजदूरी करवाना या अन्य किसी भी प्रकार की शोषणमूलक प्रथा को नकारा गया है। रजनी अपने पिता को यही बात समझाने का प्रयास करती है। अपने स्वार्थ के खातिर दूसरों के अधिकारों की बलि देना उचित नहीं है। किसी को मूर्ख बनाकर, धोखा देकर या जबरदस्ती से किसी भी प्रकार का शोषण नहीं किया जा सकता है। रजनी स्वतंत्रता और शोषण विरोधी अधिकार के बारे में बताते हुए अपने पिता ठाकुर हरनाम सिंह को समझाती है, "व्यक्ति हो या वर्ग सब स्वतंत्र और स्वावलंबन का जीवन जीना चाहते हैं, अभाव और शोषण का जीवन कोई जीना नहीं चाहता। समय करवट ले रहा है, लोग अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत हो रहे हैं। दलित-शोषित लोग अन्याय और शोषण की जंजीरों से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगे हैं। शहरों में इस तरह की चेतना लोगों में बहुत तेजी से आ रही है और लोग शोषण का विरोध करने के लिए एकजुट हो रहे हैं। समाज के भीतर धीरे-धीरे एक आन्दोलन खड़ा होता जा रहा है। सुक्खा का विद्रोह इस बात का संकेत है कि अब गाँव का गरीब मजदूर भी शोषण और अत्याचार के बंधन से मुक्त होकर अपनी स्वेच्छानुसार विकास की ओर बढ़ना चाहता है।"[३]

रजनी पिता ठाकुर हरनाम सिंह से कहती है कि उन्हें भी शोषण की प्रवृत्ति को त्याग कर स्वतंत्रता और समानतावादी विचारों को अपनाना चाहिए। जिस दिन दलित लोग अन्याय, अपमान और शोषण की जंजीरों को तोड़ देंगे उस दिन इनके आक्रोश को कोई रोक नहीं पाएगा। शोषण के खिलाफ दलितों के आक्रोश से उनको हानि उठानी पड़ सकती है। ठाकुर हरनाम सिंह पर रजनी की बातों को कोई प्रभाव नहीं होता है। वह रजनी से कहते हैं कि रजनी की बातें उनके जैसे जमींदारों के लिए अहितकारक है। अपने वर्चस्व और अस्मिता को बनाए रखने के लिए दलितों को दबाए रखना और उनका शोषण करना जरुरी है। रजनी पिता की इन दमनकारी बातों से सहमत नहीं होती है। वह स्वयं के साथ-साथ दलितों के अधिकारों की पक्षधर है। वह ठाकुर हरनाम सिंह का विरोध करते हुए कहती है, "अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए आप इतने चिंतित हैं। लेकिन जिनका आप दमन कर रहे हैं उनके बारे में सोचा है कभी उनकी भी तो कुछ अस्मिता होती है। आप उस ओर देखने की कोशिश क्यों नहीं करते। क्या वे मनुष्य नहीं हैं? जो आप अपने लिए चाहते हैं वह सब दूसरों को क्यों नहीं मिलना चाहिए?"[४]

भारतीय संविधान मानवतावादी मूल्यों को महत्व देता है। रजनी पर भी मानवीय स्वतंत्रता और समतावादी विचारों का प्रभाव है। वह गाँव के सभी दीन-दलितों के प्रति दया और करूणा की भावना रखती है। चंदन और उसके माता-पिता रमिया और सुक्खा के प्रति तो विशेष आत्मीयता रखती है। वह पिता ठाकुर हरनाम सिंह के शोषण से पीड़ित चंदन के परिवार की हर तरह से सहायता करने का प्रयास करती है। रजनी चाहती है कि उसके गाँव के सभी लोग सम्मान और स्वाभिमान से जीए। सभी को न्याय मिले। इसीलिए वह रमिया और सुक्खा के साथ हुए अन्याय को दूर करने के लिए उन्हें गाँव वापस चलने के लिए कहती है, "आप चलकर ता देखिए बाबा! पहले जैसा नहीं रह गया है अब मातापुर! एक नई जागृति सी आ गयी है लोगों में। पुरानी परम्पराएं दम तोड़ रही हैं तथा अन्याय और शोषण की संस्कृति की जगह न्याय और समता की संस्कृति का अभ्युदय हो रहा है मातापुर में।"[५] उनका घर और खेत वापस देकर उन्हें गाँव वापस चलने के लिए कहती है। सुक्खा रजनी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। तब रजनी सुक्खा को रोकते हुए कहती है, "क्या कह रहे हो बाबा! इसमें उपकार की कौन-सी बात है। यह तो कर्तव्य था मेरा और अपना कर्तव्य ही मैंने निभाया है। आप पर जितने जुल्म ढाए गए हैं तथा जितने जख्म आपको मिले हैं उनको भरने के लिए यह तो कुछ भी नहीं है बाबा! मेरे पूर्वजों द्वारा किए गए अकृत्यों के कारण मेरे मस्तिष्क पर जो कलंक लगा है उसको धोने के लिए यदि मैं अपना सब कुछ भी आपके

लिए न्यौछावर कर दूँ तो भी शायद कम होगा। इसलिए मैंने जो भी किया है वह आप पर शायद कम होगा। इसलिए मैंने जो भी किया है वह आप पर उपकार नहीं अपितु मेरे पूर्वजों द्वारा आपके साथ किए गए अन्याय का प्रायश्चित है।"[६]

सुक्खा और रमिया चंदन को रजनी द्वारा हुई मदद के बारे में बताते हैं। चंदन रजनी को धन्यवाद देना चाहता है लेकिन रजनी चंदन से कहती है, "अन्याय और शोषण के खिलाफ मैं भी हूँ। मैं भी सबको समान और खुशहाल देखना चाहती हूँ और इसीलिए तुम्हारे आंदोलन के साथ भी जुड़ी हूँ मैं।" रजनी चंदन के सामाजिक आंदोलन में शामिल होकर गाँव में सामाजिक समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुता आदि मूल्यों का प्रसार करने के लिए प्रयत्न करती है।

रजनी हवेली की बैठक में पिता ठाकुर हरनाम सिंह, जिला कलक्टर, पुलिस अधीक्षक, सेठ दुर्गादास और काणा पंडीत की सामाजिक भेदभाव को बढ़ानेवाली बातें सुनती है। तब वह उन्हें सामाजिक समानतावादी विचारों को अपनाने के लिए कहती है। जब वे उसकी बातें मानने के लिए तैयार नहीं होते है तब रजनी अत्यंत क्रोधित होकर प्रस्तुत कथन कहती है, "मैं पूछती हूं यह कौन सी व्यवस्था है, यह कहां का न्याय है? ब्राह्मण और भंगी क्या दोनों की शरीर-रचना एक जैसी नहीं होती? क्या दोनों हाड़-मांस के बने हुए नहीं होते? क्या दोनों के शरीर में बहनेवाले खून का रंग एक जैसा नहीं है? फिर दोनों समान क्यों नहीं हो सकते?"[७] रजनी सामाजिक विषमता दूर करना चाहती है। समाज में समानता, स्वतंत्रता और बंधुता जैसे मूल्यों के प्रसार के लिए सामाजिक कार्यकर्ती के रूप में काम करने लगती है।

ठाकुर हरनाम सिंह रजनी के भविष्य के लिए चिंतित होते हैं। वे उसे विवाह कर अपना घर बसाने के लिए कहते हैं। लेकिन रजनी विवाह करने की बजाए पिता की गलतियों और पापों का प्रायश्चित करना चाहती है। रजनी ठाकुर हरनाम सिंह का हृदय परिवर्तन करती है। ठाकुर हरनाम सिंह रजनी के मानवतावादी विचारों को अपनाकर शोषणकारी विचारों का त्याग करते हैं।बेटी की समानतावादी बातें मानकर सभी दलितों को उनकी जमीन वापिस कर देते हैं। रजनी मानव को सिर्फ मानव की नजर से देखती है।वह उनमें किसी तरह का भेदभाव नहीं करती है। वह दलित जाति के चंदन से प्रेम करती है। उसके माता-पिता को अपने माता-पिता के समान समझती है। कमला की मौत के बाद उसका बेटा खिलाडी चंदन के सामाजिक कार्य में बाधा न बने इसलिए वह खिलाड़ी को माँ का प्यार देने के लिए तैयार होती है। वह चंदन से कहती है गाँव चलकर अपने गाँव के विकास के लिए प्रयास करें। रजनी चंदन के साथ मिलकर अपने गाँव में संवैधानिक मूल्यों के प्रसार के लिए प्रयत्न करती है।

निष्कर्ष :

भारतीय संविधान विश्व का सर्वश्रेष्ठ संविधान है। हमारा संविधान विश्वभूषण, महामानव भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी द्वारा निर्मित है। डॉ. बाबासाहब जी स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, न्याय आदि तत्वों को महत्व देते थे। भारतीय संविधान भी इन्हीं तत्वों का पक्षधर है। डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी द्वारा लिखित 'छप्पर' उपन्यास पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर और भारतीय संविधान का अत्यंत व्यापक प्रभाव है। 'छप्पर' की नायिका रजनी एक उच्च शिक्षित आधुनिक विचारधारा की युवती है। उस पर भारतीय संविधान का गहरा प्रभाव है। डॉ. कर्दम जी रजनी के माध्यम से सभी भारतवासियों को भारतीय संविधान के मूल्यों का सम्मान करने की सीख देते हैं। रजनी के माध्यम से उपन्यासकार दर्शाते हैं कि आधुनिक युग में पारंपारिक, रूढ़ीग्रस्त और स्वार्थी विचारों को त्यागकर भारतीय संविधान ने बतायी स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, मानवता, न्याय आदि मूल्यों की राह पर चलने की नितांत आवश्यकता है। इसीसे हमारे राष्ट्र का विकास संभव है।

संदर्भ संकेत :

१) छप्पर - डॉ. जयप्रकाश कर्दम, पृ. 64-65
२) वही, पृ. 65
३) वही।
४) वही, पृ. 67
५) वही, पृ. 99
६) वही, पृ. 100
७) वही, पृ. 106
८) वही, पृ. 83